Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

MHI - 103

इतिहास-लेखन और शोध पद्धतियाँ

(Historiography and Research Method)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878   E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

इतिहास-लेखन और शोध पद्धतियाँ
(Historiography and Research Method)

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

Sample Question Paper–3 (Solved) 1

Sample Question Paper–4 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
गैर-भारतीय इतिहास-लेखन (Non-Indian Historiography)		
1.	यूनानी और रोमन परम्परा (Greek and Roman Traditions)	1
2.	परम्परागत चीनी इतिहास-लेखन (Traditional Chinese Historiography)	9
3.	पश्चिमी मध्यकालीन इतिहास-लेखन (Western Medieval Historiography)	16
4.	मध्यकाल में अरबी और फारसी इतिहास-लेखन (Arabic and Persian Historiography in Medieval Period)	22
5.	उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिमी मुख्यधारा का इतिहास-लेखन (Mainstream Western Historiography in the Nineteenth Century)	29
6.	इतिहास पर शास्त्रीय मार्क्सवादी चिन्तन (Classical Marxist Thinking on History)	35
7.	पश्चिमी मार्क्सवादी इतिहास-लेखन (Western Marxist Historiography)	41
8.	अनाल स्कूल (The Annales School)	48
9.	स्थानीय, मौखिक और सूक्ष्म इतिहास (Local, Oral and Micro Histories)	55
10.	उत्तर-आधुनिकतावाद और इतिहास-लेखन (Post-modernism and History-Writing)	60
11.	पर्यावरणीय इतिहास (Environmental History)	68
भारतीय इतिहास-लेखन (Indian Historiography)		
12.	प्राचीन भारत में इतिहास-लेखन की परम्पराएँ (Historiographical Traditions in Early India)	80
13.	मध्यकालीन भारत में इंडो-पर्शियन इतिहास-लेखन (Indo-Persian Historiography in Medieval India)	88

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

14. भारत में औपनिवेशिक इतिहास-लेखन........ 97
(Colonial Historiography in India)

15. भारत में राष्ट्रवादी इतिहास-लेखन........ 103
(Nationalist Historiography in India)

16. सम्प्रदायवादी प्रवृत्तियाँ........ 109
(Communalist Trends)

17. भारतीय मार्क्सववादी इतिहास-लेखन........ 115
(Indian Marxist History-Writing)

18. कैम्ब्रिज स्कूल........ 122
(The Cambridge School)

19. जनोन्मुखी इतिहास........ 128
(History from Below)

20. निम्नवर्गीय प्रसंग (सबाल्टर्न अध्ययन)........ 135
(Subaltern Studies)

21. भारतीय इतिहास-लेखन में जेन्डर........ 142
(Gender in Indian History-Writing)

22. भारतीय इतिहास-लेखन में नस्ल की धारणा........ 148
(The Idea of Race in Indian History-Writing)

23. किसान, मजदूर, जाति और जनजाति........ 156
(Peasantry, Working Class, Caste and Tribe)

24. धर्म और संस्कृति........ 164
(Religion and Culture)

25. पर्यावरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी........ 168
(Environment, Science and Technology)

26. भारत में आर्थिक इतिहास........ 174
(Economic History in India)

शोध और लेखन पद्धतियाँ (Research and Writing Method)

27. ऐतिहासिक स्रोत........ 180
(Historical Sources)

28. साक्ष्यों का विश्लेषण और व्यवस्थापन........ 187
(Analysis and Organization of Evidences)

29. सामान्यीकरण........ 193
(Generalisation)

30. कारण-कार्य संबंध........ 199
(Causation)

31. वस्तुपरकता और व्याख्या........ 205
(Objectivity and Interpretation)

32. इतिहास-लेखन में नैतिकता........ 212
(Ethics in History-Writing)

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

इतिहास-लेखन और शोध पद्धतियाँ

(Historiography and Research Method)

MHI-103

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. ईसाई इतिहास-लेखन पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-19, प्रश्न 2

प्रश्न 2. पर्यावरणीय इतिहास-लेखन को प्रभावित करने में अनाल स्कूल के महत्त्व पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-71, प्रश्न 1

प्रश्न 3. यूनानी इतिहासकारों के इतिहास-लेखन के क्या उद्देश्य थे?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 2

प्रश्न 4. किसी घटना के होने की व्याख्या और उसके कारण-कार्य संबंध स्थापित करने के लिए इतिहास में प्रयुक्त पद्धति की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-30, पृष्ठ-202, प्रश्न 3

प्रश्न 5. स्थानीय इतिहास क्या है? नई और पुरानी शैली के स्थानीय इतिहास के बीच भेदों की चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-56, प्रश्न 1

प्रश्न 6. कैम्ब्रिज स्कूल का उदय किस प्रकार हुआ? भारतीय इतिहास की इसकी व्याख्या के आधारभूत घटकों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-125, प्रश्न 2

प्रश्न 7. मार्क्स के विचारों का समय के साथ कैसे विकास हुआ? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-37, प्रश्न 3

प्रश्न 8. महिलावादी इतिहास-लेखन की विभिन्न विशेषताओं की चर्चा किजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-143, प्रश्न 1

प्रश्न 9. आधुनिक काल के सम्बन्ध में राष्ट्रवादी इतिहासकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-106, प्रश्न 3

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) पूर्व-आधुनिक चीन में इतिहास-लेखन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-12, प्रश्न 2

(ख) 14वीं शताब्दी में लिखित इतिहास

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-93, प्रश्न 2

(ग) जनोन्मुखी इतिहास-लेखन की समस्याएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-129, 'जनोन्मुखी इतिहास-लेखन की समस्याएँ'

(घ) साक्ष्यों का विश्लेषण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-187, 'साक्ष्यों का विश्लेषण'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 2

(Solved)

इतिहास-लेखन और शोध पद्धतियाँ

(Historiography and Research Method)

MHI-103

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. फारसी की प्रारंभिक इतिहास-लेखन परंपरा को संक्षेप में लिखें। क्या इसने अरबी इतिहास परंपरा का अनुकरण किया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-27, प्रश्न 4

प्रश्न 2. इतिहास की शास्त्रीय मार्क्सवादी व्याख्या की विभिन्न प्रवृत्तियों पर विचार करें। इसके किस पहलू को पश्चिमी मार्क्सवादी सामाजिक इतिहासकारों ने पसंद किया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-44, प्रश्न 2

प्रश्न 3. जन-इतिहास-लेखन की प्रमुख प्रवृत्तियाँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-132, प्रश्न 3

प्रश्न 4. बौद्धिक ऋण की स्वीकृति और इतिहासकारों की नैतिकता के बीच संबंध पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-32, पृष्ठ-214, प्रश्न 3

प्रश्न 5. प्रत्यक्षवाद और अनुभववाद में कौन-सी भिन्नताएँ और कौन-सी समानताएँ हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-29, प्रश्न 1

प्रश्न 6. उत्तर-आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकतावाद में क्या फर्क है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-64, प्रश्न 3

प्रश्न 7. प्राथमिक स्रोतों के विभिन्न प्रकारों का विवरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-27, पृष्ठ-183, प्रश्न 2

प्रश्न 8. अकबर के शासनकाल में अबुल फजल और बदायुंनी के लेखन की तुलना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-94, प्रश्न 4

प्रश्न 9. महिलावादी आंदोलन और लिंगभेद-संवेदी इतिहास के बीच क्या संबंध है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-145, प्रश्न 2

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) यूनानी इतिहासकारों की लेखन-शैली

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 3

(ख) अनाल स्कूल के संस्थापक

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-51, प्रश्न 2

(ग) सामंतवाद पर बहस

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-116, 'सामंतवाद पर बहस'

(घ) कार्य-कारण संबंध

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-30, पृष्ठ-201, प्रश्न 1

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

इतिहास-लेखन और शोध पद्धतियाँ
(Historiography and Research Method)

यूनानी और रोमन परम्परा
(Greek and Roman Traditions)

1

परिचय

इतिहास-लेखन की परंपरा प्राचीन ग्रीस में शुरू हुई थी और 'इतिहास' शब्द का इस्तेमाल करने वाले पहले ज्ञात लेखक हेरोडोटस थे। इतिहास के जनक माने जाने वाले हेरोडोटस और उनके उत्तराधिकारियों के कार्यों को अन्य ऐतिहासिक कार्यों के लिए मापदंड माना जाता है। उनके कार्यों की विशेषताएं इतिहास-लेखन को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इतिहास-लेखन के संदर्भ को समझना पाठकों के साथ-साथ इतिहासकारों के लिए भी महत्वपूर्ण है, ताकि वे किसी ऐतिहासिक कार्य की परिस्थितियों और आधार को जान सकें। ऐतिहासिक विवरण एक लेखक का अतीत और वर्तमान है। इसे समझने के लिए, हेरोडोटस और थ्यूसीडाइड्स जैसे कुछ इतिहासकारों, जो 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में रहते थे, और लिवी और टैसिटस, जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व में रोमन साम्राज्य के ऑगस्टान युग के दौरान रहते थे, का अध्ययन किया जा सकता है। 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व को ग्रीस का शास्त्रीय काल माना जाता है, जबकि ऑगस्टान युग को रोमन साम्राज्य का स्वर्णिम काल कहा जाता है। इतिहासकारों ने कहा है कि इतिहास-लेखन का उद्देश्य अतीत की यादों को संरक्षित करना है, मुख्य रूप से महत्वपूर्ण घटनाएँ। अधिकांश प्रारंभिक इतिहास-लेखन में युद्ध और लड़ाइयों का बोलबाला रहा है। इतिहासकारों ने अपने कार्यों में अपने लक्ष्यों को स्पष्ट किया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अतीत में घटित हुई घटनाओं को सोच-विचार कर तिथिबद्ध करना ही इतिहास है। इतिहास का अर्थ है, जो बीत चुका हो। अतीत की घटनाओं को देखकर जब कुछ व्यक्तियों द्वारा सिर्फ किसी व्यक्ति विशेष के अतीत को नहीं बल्कि तत्कालीन समाज के विषय में लेखन कार्य किया जाता है, तो वह इतिहास-लेखन कहलाता है। वैसे तो हर व्यक्ति लगभग इतिहास से परिचित होता है, क्योंकि हर व्यक्ति का कुछ अतीत होता है, जिसमें वह कुछ अच्छी व कुछ बुरी यादों को संयोजित करके रखता है।

ऐसी यादों को संजोने के लिए मनुष्य अलग-अलग तरीके इस्तेमाल करता है। वह कभी इन्हें लिखित रूप में तो कभी मौखिक रूप में संभालकर रखता है। इतिहास-लेखन वह विधा है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन से परे जाकर समग्र समाज की तत्कालीन घटनाओं के विवरण को उनके सर्वेक्षण और उनसे जुड़े तथ्यों के आधार पर लिपिबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है।

इतिहासकारों ने इतिहास को तीन भागों में विभक्त किया है। इन्हें हम क्रमशः पूर्व ऐतिहासिक काल, आद्य ऐतिहासिक काल और ऐतिहासिक काल के नाम से जानते हैं। पूर्व ऐतिहासिक काल में लेखन कला विकसित नहीं थी। अतः इसके अभाव में इस समय से जुड़ी तमाम जानकारियों के लिए इतिहासकारों ने दूसरे स्रोतों का सहारा लिया। इस काल में ऐतिहासिक जानकारियाँ उपकरणों, खिलौनों, मिट्टी के बर्तनों, चित्रों आदि से हासिल की गई थीं।

जहाँ तक आद्य ऐतिहासिक काल का संबंध है, तो इस काल में लेखन कला का जन्म हो चुका था। हालांकि इसके बावजूद इतिहासकारों को जानकारियाँ हासिल करने में कोई खास सहूलियत नहीं मिल पाई थी। इसका कारण यह है कि इस काल में लेखन कला तो अस्तित्व में आ गई थी, लेकिन दुर्भाग्यवश इस लेखन को पढ़ा नहीं जा सका है। हालांकि ऐतिहासिक काल में लेखन भलीभाँति पनप चुका था। ऐसे में इतिहासकारों को इस काल से संबंधित लिखित साक्ष्य मिल पाए हैं।

यहाँ यह बताना जरूरी है कि जब लेखन कला अपने प्रारंभिक दौर में थी या फिर यह कहें कि इसका अच्छे से विकास नहीं हो पाया था, तो जानकारियों के स्रोत चारण, भाट और कथावाचक हुआ करते थे। ये ऐतिहासिक पात्र शासकों के दरबार में हुआ करते थे। इनके द्वारा बताई गई बातों से अतीत के विषयों की जानकारियाँ मिल जाया करती थीं। इतिहास के तमाम महत्त्वपूर्ण तथ्यों की जानकारियाँ कविता के माध्यम से भी प्राप्त हुआ करती थीं। कविताएँ कंठस्थ कर लेने से उन तथ्यों को याद रखना भी आसान हो जाता था। ऐसा कई कालों में देखने को मिलता है कि कई शासक अपने दरबार में कवि रखते थे।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

इन कवियों की रचनाओं में समाज की तत्कालीन घटनाओं की झलक मिलती थी। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि इन कवियों की रचनाएँ भी कई ऐतिहासिक महत्त्व की जानकारियों का अंबार हुआ करती थीं। यह कहा जा सकता है कि इस तरह की लेखन कला का धीरे-धीरे विकास होता चला गया। इस कला से एक महत्त्वपूर्ण लाभ यह भी मिला कि लिखित सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में भी आसानी होने लगी।

ऐसे में जानकारियाँ एक जगह सीमित होकर नहीं रह सकीं। परिणामस्वरूप समाज के कोने-कोने में पहुँचने वाले इन लिखित ब्यौरों के जरिए लोगों के बीच जागरूकता आने लगी। यह कहा जा सकता है कि इतिहास-लेखन से लोगों को मानवता के उन पहलुओं को जानने का मौका मिला, जो इसके अभाव में अनछुए ही रह जाते हैं। इस अध्याय में तीन प्राचीन सभ्यताओं की जाँच-पड़ताल की गई है। ये सभ्यताएं हैं—भारत, चीन तथा ग्रीक और रोमन।

इस अध्याय में इन सभ्यताओं से जुड़ी परंपराओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। यह जानने की कोशिश की गई है कि कैसे इतिहास-लेखन का प्रारंभ इन सभ्यताओं में हुआ। इतिहास-लेखन के लिए इतिहासकारों ने अपने ज्ञान के भंडार का विकास कुछ पद्धतियों के आधार पर तो कुछ परंपराओं के आधार पर किया। जानकारियों की सत्यता पर आंच न आने पाए, इसके लिए इतिहासकारों ने अनेक तथ्यों का पता लगाकर अन्य स्रोतों से उनका मिलान किया। साथ ही आज के इतिहासकारों का मुख्य लक्ष्य पूर्वाग्रह से बचना तथा इतिहास में प्रामाणिकता का ध्यान रखना है।

यूनान व रोम में अनेक इतिहासकार हुए हैं। उन्होंने वहाँ के राज्यों और तत्कालीन समाज के संबंध में अपने विचार दिए हैं। अब इस अध्याय में हम उन इतिहासकारों का अध्ययन तो करेंगे ही जिन्होंने यूनान के धर्म, संस्कृति इत्यादि के बारे में लेखन कार्य किया है। लेकिन इसके साथ ही हम उन इतिहासकारों का भी यहाँ वर्णन करेंगे, जो यूनान से भारत आए और उन्होंने भारत के संबंध में भी अपना लेखन कार्य किया। अंग्रेजी शब्द 'हिस्ट्री' यूनानी शब्द 'हिस्टोरिया' से बना है, जिसका अर्थ 'पूछताछ व जाँच-पड़ताल' है।

सबसे पहले यूनान के एक इतिहासकार हेरोडोट्स का उल्लेख किया गया है। हेरोडोट्स का जन्म एशिया माइनर की एक यूनानी बस्ती में हुआ था। इन्हें इतिहास का जन्मदाता कहा जाता है। हेरोडोटस ने 'हिस्टोरिका' नामक ग्रंथ लिखा था। यूनानी इतिहासकार ने अपने इस ग्रंथ में अनेक देशों के विषय में लिखा है। इसमें उन्होंने भारत और फारस के संबंधों का वर्णन किया है। हेरोडोट्स के कार्यों व रचनाओं के आधार पर अनेक रचनाएँ की गईं। यूनान के इस इतिहासकार ने भारतवर्ष की उत्तर-पश्चिमी जातियों का भी वर्णन किया है। परंतु इन जातियों के बारे में हेरोडोट्स की जानकारी पूर्ण व प्रमाणित नहीं है, क्योंकि यह जानकारी उसे किसी और माध्यम से प्राप्त हुई। यह तय है कि यूनानी लेखकों ने भारत के इतिहास निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । इन यूनानी लेखकों को मुख्यत: तीन भागों में बांटा गया है। ये हैं सिकंदर के पूर्व यूनानी लेखक, सिकंदर के समकालीन यूनानी लेखक और सिकंदर के बाद के यूनानी लेखक।

पारसिक नरेश दारा के यूनानी सैनिक स्काईलैक्स को सिकंदर के पूर्व का यूनानी इतिहासकार माना जाता है। दारा ने हालांकि उसे सिंधु प्रदेश की जानकारी एकत्रित करने के लिए भेजा था, लेकिन उससे इस प्रदेश के बारे में पर्याप्त तथ्य हासिल नहीं हो सके। यह कहा जा सकता है कि एक इतिहासकार के रूप में वह सिंधु प्रदेश की जानकारी देने में असमर्थ रहा। हिकेटियस मिलेटस दूसरा यूनानी लेखक था, इसके द्वारा रचित ग्रंथ 'भूगोल स्काईलैक्स' को यात्रा विवरण व पारसियों के अनुभव के आधार पर लिखा गया था।

हालांकि मिलेटस का लेखन भी सिंधु प्रदेश तक ही सीमित था। टैसिटस रोम का प्रसिद्ध लेखक था। यह यूनान की राज्यसभा में राजवैद्य था। इसने भारतवर्ष के विषय में बहुत-सी जानकारी ईरानी अधिकारियों से प्राप्त की थी। भारत के व्यापारी व्यापार के लिए फारस जाते थे। अत: भारतवर्ष के विषय में कुछ बातें टैसिटस को प्राप्त हुईं, जिसके माध्यम से उसने लेखन कार्य किया।

सिकंदर ने जब भारत पर आक्रमण किया, तब वह भारत में सैनिकों के साथ कुछ लेखक व विद्वान लोगों को लेकर आया, जिन्होंने उस समय के युद्धों को लेखबद्ध किया। सिकंदर यदि अपने विद्वानों को न लाता तो उसके भारत पर आक्रमण का उल्लेख नहीं मिल पाता, क्योंकि भारत के पास इस आक्रमण की जानकारी के लिए कोई अन्य साक्ष्य मौजूद नहीं था। दुर्भाग्यवश इस समस्त ऐतिहासिक घटना के मूल लेख तो विलुप्त हो गए हैं, परन्तु इनके उद्धरण स्ट्रैबो प्लिनी, ऐरियन आदि के लेखों में मिलते हैं।

मौर्य वंश का संस्थापक चंद्रगुप्त था। उसका सैल्यूकस के साथ युद्ध हुआ था, जिसमें चंद्रगुप्त विजयी हुआ और चंद्रगुप्त मौर्य ने उसकी पुत्री से विवाह किया। ऐरियन व स्ट्रैबो दोनों ने ही इसका विवरण दिया है। परंतु अंतर्राष्ट्रीय विवाह संबंधों को लेकर इनमें कुछ मतभेद है। एरियन कहता है कि दोनों नरेशों के बीच युद्ध का अंत विवाह संबंधों से हुआ। स्ट्रैबो का विवरण है कि सैल्यूकस ने भू-प्रदेश चंद्रगुप्त को अंतरविवाह की शर्त पर दिया। दोनों लेखकों ने विवाह के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया है। 'केडास' का अर्थ वास्तविक विवाह संबंध से है, जबकि 'एपिगेनिया' शब्द का अर्थ दोनों राजवंशों के बीच विवाह संबंधों की प्रथा को सूचित करता है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सैल्यूकस ने अपने वंश की राजकुमारी का विवाह चंद्रगुप्त के साथ नहीं किया, बल्कि उसने दोनों राजवंशों को अंतरविवाह करने का अधिकार दे दिया। लेकिन स्ट्रैबो के संपूर्ण कथन से यह प्रतीत होता है कि वास्तव में विवाह हुआ था। यह भू प्रदेश पुत्रीधन के रूप में चंद्रगुप्त को दिया गया होगा। जिस प्रकार यूरोपीय इतिहास में बंबई, केथोलिन को दिया गया था। उसी प्रकार चंद्रगुप्त को पेरोपेनिसेडेई, आरकोसिया, जेड्रोशिया के प्रदेश दिए गए, जिससे भारतीय साम्राज्य सिंधु व पश्चिमी सीमा से बढ़कर हिंदुकश तक विस्तृत हो गया। अत: एरियन व स्ट्रैबो के लेख सिकंदर के समकालीन इतिहास जानने में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

स्ट्रैबो ने देश-विदेश का भ्रमण किया और अनुभव के आधार पर एक ग्रंथ 'भूगोल' लिखा, जो इतिहास में काफी महत्त्व रखता है। इसमें भौगोलिक अवस्थाओं के अतिरिक्त सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का भी उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त सिकंदर के साथ आए विद्वानों में नियार्कस था, जो जहाजी बेड़े का एडमिरल था। इसके लेखों के अवशेष स्ट्रैबो व एरियन के लेखों में मिलते हैं। ऐरिस्टोब्यूलियस ने अपने अनुभवों को 'हिस्ट्री

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

ऑफ द वॉर' नामक ग्रंथ में लेखबद्ध किया। एरियन व प्लूटार्क को अपने ग्रंथों को लिखने में इससे काफी सहायता मिली। ओनेस्क्रिप्टस जहाजी बेड़े का एडमिरल था। इसने सिकंदर की जीवनी लिखी थी। यद्यपि इसमें किंवदंतियों का समावेश है, फिर भी कुछ स्थानों पर महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन किया गया है।

सिकंदर के आगमन के पश्चात जो यूनानी लेखक आए, उनमें मैगस्थनीज भी था। वह चंद्रगुप्त मौर्य की सभा में आया था और सैल्यूकस का राजदूत था। इसने भारत में 'इंडिका' नामक ग्रंथ लिखा। इसका विवरण प्रत्यक्ष रूप से देखी-सुनी बातों का संकलन था। यह ग्रंथ यद्यपि विलुप्त हो चुका था, परंतु 1846 ई० में इसे पुन: संकलित कर प्रकाशित किया गया। 1891 ई० में इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। मैगस्थनीज का यात्रा विवरण स्पष्ट व शुद्ध था। 77 ई० में प्लिनी दी एल्डर ने प्राकृतिक इतिहास नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें 37 अध्याय हैं। यह मैगस्थनीज की 'इंडिका' पर आधारित है। इन यूनानी लेखकों के पश्चात पैट्रोक्लीज का नाम आता है।

यह एण्टिओकस प्रथम के पूर्वी प्रांत का पदाधिकारी था। इसने 'भूगोल' ग्रंथ की रचना की थी, जिसमें भारतवर्ष का वर्णन मिलता है। स्ट्रैबो ने पैट्रोक्लीज के लेखों की प्रशंसा की है। यूनानी लेखकों के साथ-साथ एक रोमन लेखक टालमी का उल्लेख मिलता है, जो ईसा की दूसरी शताब्दी का अति विद्वान लेखक था। इसने 'भूगोल' नामक ग्रंथ लिखा। टालमी को भारत की प्राकृतिक सीमाओं का ज्ञान ठीक से नहीं था। अत: भारतवर्ष का मानचित्र जो टालमी ने प्रस्तुत किया वह अशुद्ध था। अत: यूनानी लेखकों का भारत के इतिहास को जानने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

अब हम यूनान के उन इतिहासकारों के विषय में चर्चा करेंगे, जिन्होंने यूनान व रोम राज्यों के संबंध में लेखन कार्य किया है। इसमें मुख्यत: हेरोडोट्स और थुसीदीदेस ने यूनानी भाषा में लेखन कार्य किया है, जबकि रोमन साम्राज्य के लीवी व टैसिटस ने लातिनी भाषा में लिखा है। ऑगस्टस युग को रोमन साम्राज्य का स्वर्णकाल माना जाता है, जबकि यूनान के इतिहास को क्लासिकीय युग की संज्ञा दी गई है।

इन इतिहासकारों ने राजनीतिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक कार्य किए हैं। इन इतिहासकारों ने उस समय के राजनीतिक परिवर्तन या समाज की अच्छाइयों पर भी प्रकाश नहीं डाला है, बल्कि लीवी और टैसिटस समकालीनों के आलोचक भी रहे हैं। जहाँ समाज में बुराइयाँ थीं या सुधार की आवश्यकता थी वहाँ इन्होंने अपनी लेखनी चलाई। हेरोडोटस ने फिलीस्तीन और बेबीलोन सहित पश्चिम एशिया, उत्तरी अफ्रीका व मिस्र की यात्रा की। एथेन्स के प्रति उसकी गहरी श्रद्धा थी। यही कारण है कि वह फारस व यूनान के बीच हुए युद्ध की ऐतिहासिक विजय को वे सभ्यता व बर्बरता के बीच की लड़ाई के रूप में देखते हैं।

थुसीदीदेस का एथेन्स के साथ गहरा संबंध है। पेलोपोनिसियन युद्ध एथेन्स व स्पार्टा के बीच संघर्ष था। इस युद्ध में थुसीदीदेस ने एथेन्स की ओर से जनरल के रूप में युद्ध किया। यह युद्ध लगभग तीस सालों तक चला। जनरल के रूप में चूँकि यह युद्ध असफल रहा था, इसलिए कुछ दिनों के लिए इसे निर्वासित कर दिया गया और थुसीदीदेस को कुछ दिन उन देशों में बिताने पड़े, जो एथेन्स के विरोधी थे। अत: उसने अपने इस काल के अनुभवों को लेखबद्ध किया है। उसने युद्ध के बारे में वर्णन किया। साथ ही इस युद्ध में कहाँ कमियाँ थीं, इसका भी वर्णन किया है।

यूनान के इतिहास में यह काल क्लासिकीय युद्ध के रूप में देखा जाता है। यह समय यूनान में दार्शनिकों का युग था। इस समय सुकरात, ऐसिलस, रेफोक्लीस, यूरिपिदिस जैसे नाटककार हुए, परन्तु हेरोडोटस व थुसीदीदेस के लेखों में इनका वर्णन नहीं मिलता। अत: लेखकों ने यहाँ पर संकुचित दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया है, जो उचित नहीं है। रोमन साम्राज्य में लीवी और टैसिटस लेखक हुए। रोमन साम्राज्य का विस्तार यूरोप ऐशिया व अफ्रीका जैसे तीन महाद्वीपों के क्षेत्रों तक था।

लीवी एक रोमन इतिहासकार था। वह न तो सीनेट का सदस्य था और न ही राजनीति से उसका कोई संबंध था, फिर भी रोम के इतिहास-लेखन में उसका योगदान है, जो 142 पुस्तकों में संकलित है, परंतु इनमें से अधिकांश किताबें खो गईं हैं और कुछ को बाद के लेखकों ने अपने सारांश में सम्मिलित कर लिया है। इन पुस्तकों में पौराणिक इतिहास से लेकर नवीं शताब्दी तक का वृत्तांत संकलित था।

टैसिटस का साम्राज्यवादी प्रशासन से निकटता का संबंध था। उसने अपने लेखों में पचास सालों के रोमन साम्राज्य के इतिहास का चित्रण किया है। साथ ही प्रशासन व्यवस्था में उच्च वर्गों में कार्यरत लोगों के असंतोष, उत्तराधिकार संबंधी प्रश्न व राजनीतिक मामलों में सेना की भूमिका का वर्णन किया है। उसने अपने लेखन में यह भी स्पष्ट किया है कि रोम साम्राज्य के उच्च वर्ग में एकरूपता नहीं थी।

इस समय जो इतिहास-लेखन किया गया, वह निश्चित विषयों को आधार बनाकर ही किया गया था। इनमें कुछ भव्य व महान समझी जाने वाली स्मृतियों को सम्मिलित किया गया, जिसमें युद्ध से संबंधित महत्त्वपूर्ण घटनाओं को शामिल किया गया है। हेरोडोट्स ने इनके अलावा अनेक रोचक व आकर्षक वृत्तांत भी प्रस्तुत किए हैं, जो काल्पनिक दुनिया के निकट दिखाई देते हैं।

इतिहासकारों ने पहले ही अपने उद्देश्य को घोषित कर दिया था। उन्होंने कहा था कि उनका उद्देश्य उन महत्त्वपूर्ण घटनाओं का संकलन करना था, जो समय के साथ नष्ट हो चुकी थीं। साथ ही यूनानी लोगों का बर्बर लोगों से युद्ध क्यों हुआ, उनके कारणों को जानने का भी प्रयास किया। उन्होंने एथेन्सवासियों की विजयगाथाओं का भी वर्णन किया। साथ ही वे फारसियों व स्पार्टावासियों की वीरता का वर्णन करने से भी नहीं चूके थे।

थुसीदीदेस ने पेलोपिनिसियनों व एथेन्सवासियों के बीच युद्ध और उसके परिणाम का वर्णन किया है, जिसमें उसने लिखा है कि यह युद्ध अन्य युद्धों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण रहा होगा। लीवी व टैसिटस ने यह भी लिखा है कि रोम साम्राज्य का विस्तार युद्धों के बल पर ही संभव हो सका है। ऑगस्टन युग को रोमन साम्राज्य का स्वर्णकाल माना गया है। उस समय के लेखकों के मन में राज्य के पतन होने का भय हमेशा बना रहता था।

लीवी ने लिखा है कि हमारे पूर्वजों ने पहले सत्ता अर्जित की और बाद में इसका विस्तार किया। उसने यह भी कहा है कि पहले रोम साम्राज्य का विस्तार हुआ और जैसे ही यहाँ नैतिकता का अंत हुआ, धीरे-धीरे रोम साम्राज्य का विघटन प्रारंभ हो गया। लीवी व

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

टैसिटस ने अपने इतिहास-लेखन को लाभप्रद व शिक्षाप्रद माना है। उनका कहना है कि इतिहास के रूप में हमारे पास ऐसे अनुभव व दस्तावेज हैं, जिनके माध्यम से भविष्य में कुछ सीखने को मिल सकता है। टैसिटस ने अपने लेखन को काल्पनिकता से दूर रखा है।

प्रमाण व स्रोतों को स्पष्ट व अस्पष्ट दोनों ही रूपों में व्यक्त किया गया है। लेखन में प्रत्यक्ष रूप से देखे हुए अवलोकन को महत्त्व दिया गया है। लेखन में अनेक स्रोत और जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कारों, इतिवृत्तों, परंपराओं और अनेक दस्तावेजों का सहारा लिया गया है। मकबरों के आस-पास मिले अभिलेख और परंपराएँ लेखन के लिए महत्त्वपूर्ण स्रोत माने गए हैं। इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण डेल्की का मकबरा है। शासक व सैनिक युद्ध में जाने से पूर्व हमेशा इन मकबरों में जाते थे। हेरोडोटस ने लिखा है कि कोई भी कार्य जब सफलतापूर्वक हो जाता था, तो मकबरे पर भेंट चढ़ाई जाती थी। हेरोडोट्स ने मेसोपोटामिया में कृषि की स्थिति का आँखों देखा हाल लिखा है।

यहाँ पर भले ही अंजीर, जैतून और अंगूर इतना न होता हो, परंतु अनाज के मामले में यह काफी सक्षम था। यहाँ पर गेहूँ और जौ की फसल काफी मात्रा में होती थी। यहाँ की पैदावार दो सौ से तीन सौ गुना थी। ऐसा ही एक उदाहरण हेरोडोटस प्रस्तुत करता है, जिसमें उसने फारसियों के अभिवादन का तरीका बताया है। उसके अनुसार जब रास्ते में फारसी एक-दूसरे से मिलते थे, तो उनके मिलने के तरीके से उनकी हैसियत के बारे में देखने वाला अंदाजा लगा सकता था।

यदि दो मिलने वाले एक समान हैसियत के होते थे, तो बातचीत करने के बजाय वे एक दूसरे के होंठों पर चुंबन दिया करते थे। यदि एक व्यक्ति दूसरे से जरा कम हैसियत वाला होता था तो चुंबन गालों पर हुआ करता था। अगर दो मिलने वालों के स्तर में बड़ा फासला हुआ करता था, तो कम हैसियत वाले व्यक्ति द्वारा दूसरे को दंडवत किया जाता था।

थुसीदीदेस ने अपने विवरण में साफ बताया है कि रोम में वार्षिक दस्तावेज लिखे जाने की व्यवस्था थी। इस व्यवस्था को 'अनाल मकसीमी' कहा जाता था। इनमें वे न्यायाधीश होते थे, जिन्हें हर वर्ष नियुक्त किया जाता था। इन दस्तावेजों को पादरियों द्वारा संगृहीत किया जाता था। रोम में उच्च वर्ग में अंत्येष्टि की प्रथा भी प्रचलित थी। इस प्रकार युद्ध, सीनेट की कार्यवाही, षड्यंत्रों आदि को टैसिटस ने अपने विवरण के जरिए प्रस्तुत किया। यह कहा जा सकता है कि इन इतिहासकारों ने समाज के हर वर्ग तथा हर क्षेत्र में लेखन का कार्य किया। इन लेखकों ने घटनाओं का विवरण बड़े ही जीवंत ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने लेखों में प्रामाणिकता, सत्यता व स्पष्टता को पिरोने का प्रयास किया है।

इन इतिहासकारों ने बडी सावधानी से एक-एक वाक्य को अपने कौशल का प्रयोग करते हुए संकलित किया है, जो इनके अनुवाद में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। थुसीदीदेस ने कई जगह बड़ी गंभीरता से अपने विचारों को लिखा है। एथेंस व स्पार्टा के युद्ध के दूसरे वर्ष में एथेंस में प्लेग फैला, जिसकी चपेट में हजारों लोग आ गए। इसका एक उदाहरण उसने प्रस्तुत किया है। "अच्छे भले लोग अचानक ही सिर में भयंकर दर्द और आँखों में सुर्खी व जलन के शिकार हो गए, जिससे अस्वाभाविक तथा दुर्गंधयुक्त साँस आने लगी।" थुसीदीदेस ने अपने लेखन में भाषणों का भी संकलन किया है, जो उन्होंने बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। लीवी ने अपने लेखों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है।

यूनानी व रोमन इतिहासकारों की ज्यादा रुचि ऐसे वृत्तांतों में थी, जिन्हें वे ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने घटनाओं के समय व स्थान का तो सावधानीपूर्वक ध्यान रखा, परन्तु किसी घटना के घटने के कारण पर ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाती थी। लेखकों ने राजनीतिक और तात्कालिक वातावरण से हटकर और क्षेत्रों पर कार्य किया है। कुछ उदाहरणों में यह देखने को मिलता है कि उन्होंने शकुन व अपशकुन को माना है, उनका यह सोचना था कि व्यक्ति के भाग्य के आधार पर ही शकुन व अपशकुन होता है। हेरोडोटस के लेख इन उदाहरणों से भरे पड़े हैं।

थुसीदीदेस ने अनेक अद्भुत घटनाएँ तो देखीं, पर उन पर कोई टिप्पणी नहीं की। उसने सिसली में एटना की चोटी पर ज्वालामुखी फटते हुए देखा। लेकिन उन्होंने उसका वर्णन करने का या किसी दूसरी घटनाओं से उसका संबंध स्थापित करने का प्रयास नहीं किया। उस समय दैवी प्रकोप से बचने के लिए तरह-तरह की प्रार्थनाएँ की जाती थीं, जैसे लीवी ने वर्णन किया है कि किस तरह के निर्देश एक व्यक्ति ने दासों को कुछ पूजा-पाठ संबंधी क्रियाकलापों के लिए दिए थे।

तथ्यों को इतिहासकारों ने काफी रोचक अंदाज में प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए थुसीदीदेस ने दिलचस्प ढंग से लिखा है कि खेती वाली जमीनों पर आक्रमण ज्यादा हुआ करते थे। जबकि कम उपजाऊ जमीनें ऐसे आक्रमणों से सुरक्षित रहा करती थीं। उन्होंने इसके लिए एटिका राज्य, जिसकी राजधानी एथेंस थी, का उदाहरण भी दिया है। उनका कहना है कि यह राज्य सिर्फ इसलिए आक्रमण से मुक्त था, क्योंकि यहाँ की भूमि उतनी उपजाऊ नहीं मानी जाती थी। ऐसे में यह राज्य लोगों की शरणगाह बनकर उभरा था। इतिहास के कई पहलुओं के इस प्रकार से रोचक प्रस्तुतीकरण को अगर यूनानी-रोमन परंपरा के इतिहासकारों की देन कही जाए, तो गलत नहीं होगा।

स्वपरख अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न 1. हेरोडोट्स और थुसीदीदेस के लिखे हुए इतिहासों को वस्तुगतता के पैमाने पर आप कहाँ रखेंगे?

उत्तर–इतिहास-लेखन में वस्तुपरकता बहुत आवश्यक है। किसी भी घटना की व्याख्या के पहले इसका गूढ़ता से पता लगाया जाता है कि किसी तथ्य में कितनी सत्यता व यथार्थता है और उसी के आधार पर फिर इतिहास-लेखन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, कहा जाए तो इतिहास-लेखन का आधार वस्तुपरकता है। पश्चिमी इतिहास-लेखन में वस्तुपरकता का विशेष स्थान है। इतिहासकार को निष्पक्ष होना चाहिए। उसे अपनी व्यक्तिगत धारणाओं को छोड़कर केवल तथ्यों की सत्यता के आधार पर लेखन करना चाहिए।

पीटर नोविक कहते हैं कि इतिहासकार को एक निष्पक्ष न्यायाधीश की भाँति होना चाहिए, न कि किसी वकील व प्रचारक की भूमिका में। जिस प्रकार न्यायाधीश किसी भी अपराधी का निर्णय बिना किसी स्वार्थ और बिना किसी तरफदारी के करता है, उसी प्रकार इतिहासकार

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com